

छत्तीसगढ़ में कलचुरी

(Kalturi Dynasty in chhattisgarh From 1000 to 1741 A.D.)

- ◆ इसका शासन काल (1000-1741) ई तक
- ◆ कलचुरी वंश के आदिपुरुष या मुलपुरुष - कृष्णराज
- ◆ त्रिपुरी के कलचुरी वंश के संस्थापक - वामराजदेव
- ◆ त्रिपुरी में स्थायी रूप से राजधानी स्थापना का श्रेय - कोवकल
- ◆ यह छ.ग. में सर्वाधिक समय तक शासन करने वाला वंश है।
- ◆ कोवकल प्रथम के पुत्र शंकरगढ़ द्वितीय (मुग्धतुंग) ने सर्वप्रथम छ.ग. के पाली क्षेत्र में अपना अधिकार स्थापित किया जिसे 950 ई. में सोमवंशी शासकों ने अपने अधिकार में ले लिया त्रिपुरी के शासक लक्ष्मणराज ने अपने पुत्र कलिंगराज के नेतृत्व में सेना भेजकर यहां कलचुरियों की वास्तविक सत्ता स्थापित की। जो कि त्रिपुरी के लहुरी शाखा के शासक थे। [CG PSC (Pre) 2014]

प्रमुख शासक

1. कलिंगराज (Kalingraj) (1000 से 1020 ई.)

- ◆ छ.ग. में कलचुरी वंश का वास्तविक संस्थापक (Established Real Rule of the Kalturies) [CG PSC (Asst. Dir. Handloom) 2011], [CG PSC (ASST. PROF. ENGG) 2016]
- ◆ राजधानी - तुम्माण (कलचुरियों की आरंभिक राजधानी) [CG PSC (ADI) 2017], [CG Vyapam (PDO), (ADEO) 2012]
- ◆ चैतुरगढ़/तुम्माड़ में महिषासुर मर्दिनी मंदिर का निर्माण कराया।

2. कमलराज (Kamalraj) (1020 से 1045 ई.)

- ◆ इन्होंने त्रिपुरी के राजा गंगदेव को उड़ीसा अभियान में सहायता प्रदान की।
- ◆ तुम्माण राजधानी से कलिंगराज और कमलराज ने छ.ग. पर शासन किया। [CG PSC (Engg, Set-1) 2015]

3. रत्नदेव प्रथम (Ratnadev-I) (1045 से 1065 ई.)

- ◆ राजधानी - रत्नपुर [CG PSC (Mains) 2011]
- ◆ इन्होंने 1050 ई. में रत्नपुर नगर की स्थापना की।
- ◆ निर्माणकार्य - महामाया मंदिर (रत्नपुर) [CG PSC (Librarian) 2014]
- ◆ महिषासुर मर्दिनी (लाफागढ़)
- ◆ रत्नपुर को तालाबों की नगरी (Tank of City) के रूप में प्रसिद्ध किया।
- ◆ रत्नदेव के शासन काल में रत्नपुर को कुबेरपुर की संज्ञा दी गई (Ratanpur at this time was called as Kuberpur due to prosperity)।
- ◆ रत्नदेव प्रथम ने 11 वीं शताब्दी में रत्नपुर में महामाया मंदिर का निर्माण करवाया।

रत्नपुर के अन्य नाम :-

- | | | |
|--------------------|---|----------------------|
| 1. महामारत काल | - | मणिपुर |
| 2. कलचुरी काल में | - | रत्नपुर एवं कुबेरपुर |
| 3. वर्तमान काल में | - | रत्नपुर |

4. पृथ्वीदेव प्रथम (Prithvidev - I) (1065 - 95 ई.)

- ◆ इन्होंने सकलकोसलाधिपति (Sakalakosaladhipati) एवं प्रचण्ड कोसलाधिपति की उपाधि धारण की। [CG PSC (SEE) 2016], [CG Vyapam 014]
- ◆ रत्नपुर के विशाल तालाब (Larg Pond) का निर्माण करवाया। [CG PSC (Pre) 2015]
- ◆ अमोदा ताम्रपत्र (Amoda Copperplate) के अनुसार 21 हजार गाँव का स्वामी था।

5. जाजल्यदेव प्रथम (Jajalladev-I) (1095- 1120 ई.)

- ♦ उपाधि - गजशार्दूल (Title of Gajsardul) (हाथियों का शिकारी)
- ♦ इसने त्रिपुरियों के अधीनता को अस्वीकार कर दिया।
- ♦ इन्होंने स्वर्ण सिक्के जारी किये, (Issued Gold Coin of This Time) जिसमें श्रीमद् जाजल्यदेव व गजशार्दूल चित्रित करवाया।
- ♦ जाजल्यदेव प्रथम ने छिन्दक नागवंशी शासक सोमेश्वरदेव को पराजित कर सपरिवार बंदी बना लिया था किन्तु सोमेश्वर देव की माता गुन्डमहादेवी की सिफारिश पर जाजल्यदेव ने छोड़ दिया। [CG PSC (ADI)2017]
- ♦ बाण वंशीय शासक विक्रमादित्य द्वारा निर्मित पाली के शिवमंदिर (कोरबा) का जीर्णोद्धार (Renovated) कराया था। [CG Vyapam (FT) 2013]
- ♦ इन्होंने जाजल्यपुर (जाजगीर) नगर बसाकर वहां विष्णु मंदिर का निर्माण कराया। [CG PSC (AD.Agri.AD.Fish.) 2013]

6. रत्नदेव द्वितीय (Ratndev-II) (1120 - 35 ई.)

- ♦ गंगवंशीय शासक अनंतवर्मन चौड गंग को शिवरीनारायण के समीप हराया था।

7. पृथ्वीदेव द्वितीय (Prithavi Dev - II) (1135 - 65 ई.)

- ♦ सेनापति जगपालदेव ने विलासतुंग द्वारा स्थापित राजीव लोचन मंदिर का जीर्णोद्धार (Renovated by his noble Jagatpal) कराया। [CG PSC (CMO) 2013]
- ♦ इसके भाई अकालदेव ने अकलतरा नगर की स्थापना की। (जो हैहय वंशीय नाम से स्थापित किया)
- ♦ कल्युरियों का सर्वाधिक विस्तृत साम्राज्य इन्ही के शासन काल में हुआ।
- ♦ इनके जानकारी राजिम शिलालेख से मिलती है।

8. जाजल्यदेव द्वितीय (Jajlyadev - II) (1165-78 ई.)

- ♦ इनके मल्हार शिलालेख के अनुसार त्रिपुरी के शासक जयसिंह ने रतनपुर पर आक्रमण किया जो असफल रहा।

9. जगतदेव (Jagaddev)

10. रत्नदेव तृतीय (Ratnadev - III) (1178-98 ई.)

- ♦ रत्नदेव तृतीय के सेनापति गंगाधर राव ने खरौद का लक्ष्मणेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार कराया।
- ♦ इन्होंने रतनपुर में लखनीदेवी मंदिर का निर्माण 1165 ई. में कराया।

11. प्रतापमल (Pratapmalla) -

प्रतापमल के बाद लगभग 200 वर्षों तक की शासन काल जानकारी नहीं मिलती है जिसे अंधकार युग की संज्ञा दी जाती है। इसके बाद निम्नलिखित शासक मिले।

12. बाहरेन्द्र साय (Baharendra Sai) (1480-1525)

- ♦ बाहरेन्द्र साय ने रतनपुर के स्थान पर छुरी कोसगई का निर्माण कराया और कोसागार की स्थापना की
- ♦ राजधानी - कोसगई (कोरबा)
- ♦ निर्माणकार्य - कोसगई मंदिर (छुरी, कोरबा) चैतुरगढ़ का किला

13. कल्याणसाय (Kalyan Sai) (1544 & 1581)

- ♦ मुगल सम्राट जहांगीर ने इन्हें 8 वर्षों के लिए नजरबंद करवा-दिया था। (गोपल्ला गीत के अनुसार) [CG PSC (Mains)2011]
- ♦ बाबू रेवाराय के अनुसार कल्याण साय एवं मण्डला के राजस्व अधिकारी के विवाद परिणाम स्वरूप कल्याण साय को अकबर ने अपने दरबार में बुलाया और आठ वर्षों तक रखा।
- ♦ इन्होंने राजस्व की जमाबंदी प्रणाली की शुरुआत की। साथ ही गढ़ व्यवस्था भी शुरू किया।
- ♦ इसी जमाबंदी प्रणाली के आधार पर ब्रिटिश अधिकारी मि. चिस्म ने प्रदेश को 36 गढ़ों में विभाजित किया।
- ♦ यह मुगल दरबार में उपस्थित हुआ था। [CG PSC (ADI)2017]

14. लक्ष्मणसाय (Laxmansai)

- देशबही खाता की शुरुआत किया और साथ ही लेखा-जोखा बजट प्रणाली की शुरुआत की।
- तोरमी और तरंगा नामक दो तालुकदार प्रथा की शुरुआत की।

15. तखतसिंह (Takhat Singh)

- यह मुगल सम्राट औरंगजेब का समकालीन था।
- इन्होंने 17वीं सदी में तखतपुर नगर की स्थापना की।

16. राजसिंह (Raj Singh) (1689 & 1712)

- राजसिंह का दरबारी कवि गोपाल मिश्र थे। जिनकी रचना खूब तमाशा में औरंगजेब का आलोचना की।
- राजसिंह ने मोहन सिंह को शासन सौंपने का वादा किया था किन्तु राजसिंह के मृत्यु के समय मोहन सिंह शिकार पर जाने के कारण राजसिंह के चाचा सरदारसिंह शासक बने।
- राजसिंह देव ने बादल महल का निर्माण कराया था।

[CG Vyapam (RI) 2015]

[CG Vyapam (E.Chemist) 2016]

17. सरदारसिंह (Sardar Singh)

18. रघुनाथसिंह (Raghunath Singh) (1732-1741)

- कलचुरियों की अंतिम शासक जबकि मराठों के अधीन प्रथम शासक था।
- सन् 1741 ई. में भोंसला शासक रघुजी प्रथम के सेनापति भास्कर पंत ने छ.ग. पर आक्रमण कर कलचुरी वंश को समाप्त कर दिया।
- सन् 1741 ई. में छत्तीसगढ़ पर मराठा आक्रमण के समय रतनपुर राज्य पर कलचुरी शासक रघुनाथ सिंह था [CG PSC (ACF) 2016]
- रतनपुर राज्य के सेना एवं मराठों सेना के मध्य युद्ध नहीं हुआ है। और रघुनाथ सिंह आत्मसमर्पण कर दिया।

[CG PSC (ADI) 2017]

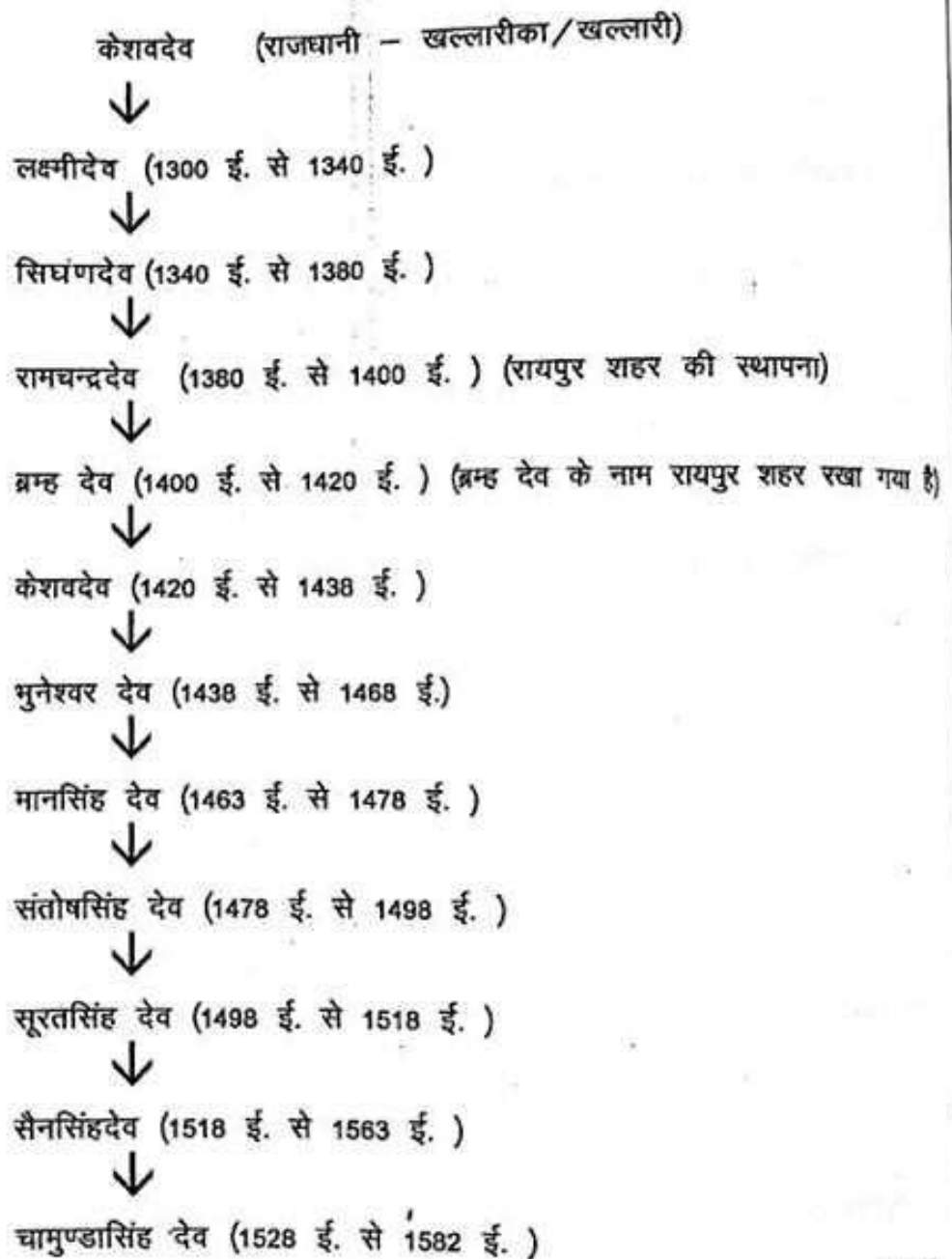
19. मोहनसिंह (Mohan Singh) (1742-1745)

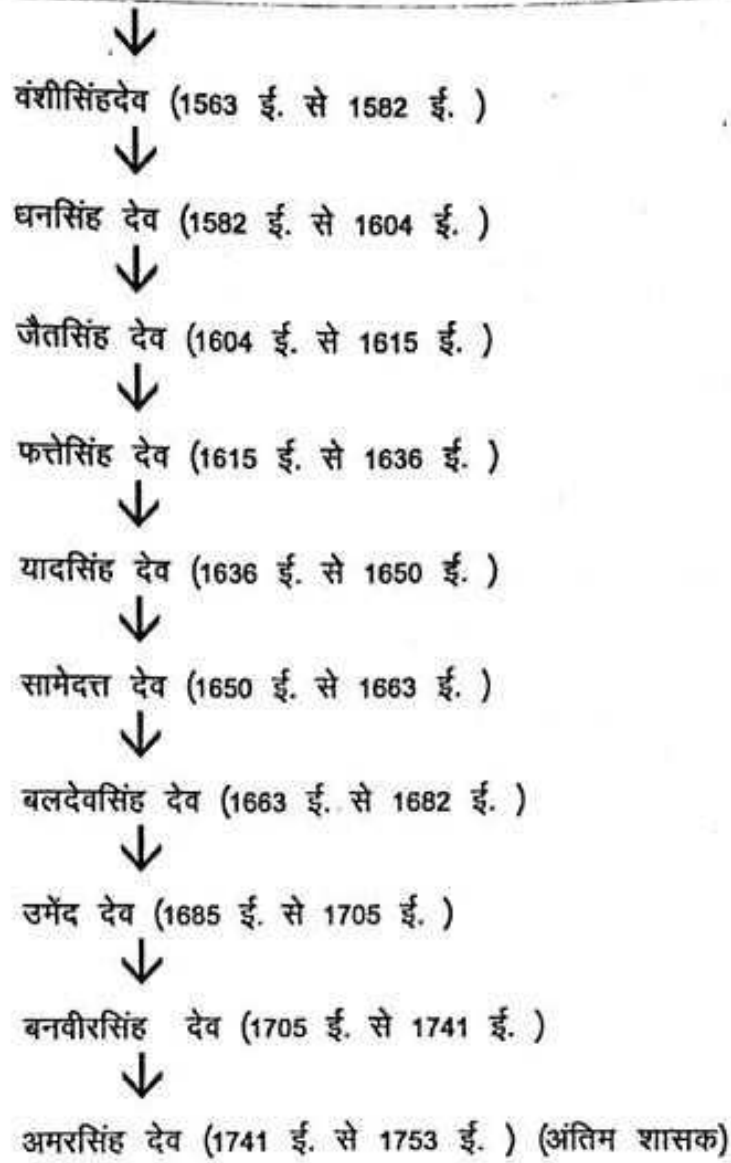
- मराठों के अधिन अंतिम कलचुरी शासक थे।

रायपुर के कल्चुरियों की लहुरी शाखा (Raipur or lahuri branch of Kalties)

14 वीं शताब्दी में वीरसिंहदेव के शासनकाल के दौरान कल्चुरी साम्राज्य का विभाजन हो गया कल्चुरियों की नवीन शाखा के रूप में लहुरी शाखा का रायपुर में उद्भव हुआ। जिसके प्रथम शासक केशवदेव थे।

- ♦ रायपुर के कल्चुरियों की लहुरी शाखा (Raipur or lahuri branch of Kalties) -
14 वीं शताब्दी में वीरसिंह के शासनकाल के दौरान कल्चुरी साम्राज्य का विभाजन हो गया कल्चुरियों की नवीन शाखा के रूप में लहुरी शाखा का रायपुर में उद्भव हुआ। जिसके प्रथम शासन केशवदेव थे।



**केशव देव**

- ♦ रायपुर के लहुरी शाखा के संस्थापक
- ♦ राजधानी - खल्लारी

रामचंद्र देव

- ♦ इन्होंने रायपुर नगर की स्थापना की

ब्रम्हदेव

- ♦ राजधानी - रायपुर (1409) ई. में
- ♦ इनके शासनकाल में देवपाल नामक व्यक्ति ने 1415 ई. में खल्लारी (महासमुंद) में विष्णु मंदिर का निर्माण कराया।
- ♦ अमर सिंह - रायपुर लहुरी शाखा के अंतिम राजा थे।

कलचुरी राज्य का पतन

- ◆ 18वीं शताब्दी के दौरान कलचुरी शासकों की केन्द्रीय सत्ता के कमजोर होने व मोहन सिंह के धड़यंत्रों ने प्रदेश में एक नवीन राजनैतिक शक्ति के उदय को अनुकूल माहौल प्रदान किया।
- ◆ सन् 1741 में नागपुर के भोसलावंश के सेनापति भास्कर पंत ने रतनपुर पर अक्रामण किया। जिसमें तत्कालिन वृद्ध कलचुरी शासक रघुनाथ सिंह पराजित हुए।
- ◆ इसके पश्चात् मराठों ने सन् 1750 ई. में रायपुर के लहुरी शाखा के कलचुरी शासक अमरसिंह को अपने नियंत्रण ले लिया। इस प्रकार 750 वर्षों तक शासन करने वाले कलचुरियों शासकों का शासन समाप्त हो गया।

कलचुरी शासन व्यवस्था

कलचुरी शासकों ने प्रदेश में सर्वाधिक अवधि तक शासन कर एक सुदृढ़ शासन व्यवस्था की स्थापना की थी। इनके शासन को कई वर्गों में बांटा जा सकता है।

प्रशासन :- कलचुरियों ने छ.ग. में एक लोकप्रिय विकेन्द्रीत शासन व्यवस्था स्थापित की। जिसका प्रमुख राजा होता था। इनके द्वारा प्रशासनिक पदों पर स्थानीय लोगों को नियुक्त किया गया।

प्रशासनिक विभाजन

- ◆ कलचुरियों ने प्रशासन की सुविधा के लिए कई प्रशासनिक इकाईयों का गठन किया था।
- ◆ स्थानीय प्रशासन हेतु पंचकुल संस्था कलचुरी शासकों ने बनवाई थी।

[CG PSC (SEE) 2016]

प्रशासनिक इकाई	विवरण
1. मण्डल	<ul style="list-style-type: none"> ◆ यह प्रशासन की सबसे बड़ी इकाई थी। ◆ एक मण्डल 1 लाख गांव का समूह होता था। ◆ मण्डल के शासन का प्रमुख को महामण्डलेश्वर कहते थे।
2. गढ़	<ul style="list-style-type: none"> ◆ एक गढ़ में 84 गांव का समूह होता था। (7 बरहा का एक गढ़) ◆ गढ़ का शासन प्रमुख दीवान कहलाता था।
3. बरहों	<ul style="list-style-type: none"> ◆ बरहों का प्रमुख दाऊ कहलाता था। ◆ यह 12 गांवों का समूह होता था।
4. ग्राम	<ul style="list-style-type: none"> ◆ यह प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। ◆ ग्राम प्रमुख गौटिया कहलाता था।

मण्डल	-	महामण्डलेश्वर
गढ़	-	दीवान
बरहो	-	दाऊ
ग्राम	-	गौटिया

2. कल्युरीकालीन अधिकारी गण :-

1. महामंत्री - सर्वप्रमुख अधिकारी, जो राजा का प्रशासनिक सलाहकार होता था।
2. महाध्यक्ष - सचिवालय प्रमुख
3. महाप्रतिहार - संचार विभाग का प्रमुख
4. महाप्रमातृ - यह जमाबंदी विभाग का प्रमुख होता था जो भूमि लगान निश्चित करता था।
5. शोलिकक - कर संग्रहण अधिकारी
6. पुरप्रधान - नगर प्रमुख अधिकारी
7. ग्रामकुट - ग्राम प्रमुख अधिकारी
8. महासंधिविग्रह - विदेश विभाग का प्रमुख
9. महाकोदटपाल - दुर्ग या किले की रक्षा करने वाला
10. महापुरोहित - धार्मिक विभाग का प्रमुख

मुद्रा

- 4 कौड़ी = 1 गण्डा
 5 गण्डा = 1 कोरी
 16 कोरी = 1 दागोनी
 11 दागोनी = 1 रूपया

मापन

- 5 सेरी = 1 पंसेरी
 8 पंसेरी = 1 मन

प्रशासनिक इकाई	विवरण
0 पुलिस व्यवस्था	1. दण्डपाशिक - सर्वोच्च पुलिस अधिकारी 2. दुष्ट साधक - चोर को पकड़ने वाला
0 न्याय व्यवस्था	न्याय अधिकारी - दांडिक
0 राजस्व व्यवस्था	कल्युरी शासकों की आय का प्रमुख स्रोत कराधान था। जिसका मुख्य प्रमुख महाप्रमातृ होता था।
0 धार्मिक व्यवस्था	कल्युरी शासकों का व्यक्तिगत धर्म शैव था, इनकी कुल देवी गजलक्ष्मी थी, अधिकांश शासकों ने अपनी मुद्रा में ऊँ नमः शिवाय उत्कीर्ण करवाया। तथा इसका प्रमाण रतनपुर महामाया मंदिर के गेट पर ऊँ नमः शिवाय से होता है

वंश	शासक	उपाधि	निर्माण कार्य
कल्चुरी वंश	कलिंगराज		• चैतुरगढ़/तुम्माड़ में महिषासुर मर्दिनीमंदिर
	रत्नदेव प्रथम		• महामाया मंदिर (रतनपुर) • महिषासुरमर्दिनी (लाफागढ़)
	पृथ्वीदेव प्रथम	सकलकोसलाधिपति	• रतनपुर के विशाल तालाब का निर्माण
	जाजल्यदेव प्रथम	गजशार्दूल	• विक्रमादित्य द्वारा निर्मित पाली के शिवमंदिर का जीर्णोद्धार करवाया • जाजगीर में विष्णुमंदिर बनवाया
	पृथ्वीदेव द्वितीय		• सेनापति जगपालदेव ने बिलासतुंग द्वारा स्थापित • राजीव लोचन मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। • अकलतरा नगर की स्थापना इनके भाई अकालदेव ने की।
	रत्नदेव तृतीय		• रतनपुर में लखनी देवी मंदिर का निर्माण रत्नदेव तृतीय के सेनापति गंगाधर राव ने खरौद का लक्ष्मणेश्वर मंदिर का जीर्णोद्धार (कराया)
	बाहरेन्द्र साय		कोसगई मंदिर (छुरी, कोरवा) चैतुरगढ़ किला
	ब्रम्हदेव		इनके शासनकाल में देवपाल मोची ने 1415 ई. में खल्लारी (महासमुंद) में विष्णु मंदिर का निर्माण
फणीनागवंश	गोपाल देव		भोरमदेव मंदिर का निर्माण करवाया
	रागचन्द्रदेव		मड़वा महल एवं छेरकी महल का निर्माण किया
छिंदकनागवंश	धारावर्ष		• धारावर्ष के सेनापति चन्द्रदेव थे जिन्होंने बारसुर के चन्द्रदितेश्वर, मामा मांजा मंदिर, विशाल गणेश प्रतिमा और तालाब का निर्माण करवाया।
	अन्नमदेव		• दंतेश्वरी मंदिर (दंतेवाड़ा)
काकतीय वंश	पुरुषोत्तम देव	स्थपति	
	दत्तपतदेव		• दत्तपत सागरनाम से तालाब/झील बनवाया।
	रुद्रप्रतापदेव	सेंट आफ जेरुसलम	• जगदलपुर को घौराहो का शहर बनाया

[CG Vyapam (FI)2017]

फणिनागवंश

मध्यकाल के दौरान छ.ग. कवर्धा जिले में फणिनागवंश का शासन था।

शासनकाल - लगभग 11 वीं शताब्दी से 14 वीं शताब्दी तक।

प्रमुख शासक :-

1. **अहिराज :-** फणिनागवंश का संस्थापक

2. **गोपालदेव**

- ◆ गोपालदेव ने 1089 ई. में (11 वीं शताब्दी में) कवर्धा में ग्राम चौरा में भोरमदेव मंदिर का निर्माण करवाया।
[CG PSC (Pre)2005], [CG Vyapam (SI)2006]
- ◆ भोरमदेव मंदिर चन्देल वंशीय खजुराहो मंदिर होने के कारण छ.ग. का खजुराहो कहते हैं।
- ◆ भोरमदेव मंदिर नागर शैली में निर्मित है।
- ◆ भोरमदेव एक आदिवासी देवता है।
- ◆ भोरमदेव मंदिर का निर्माण फणिनागवंश के काल में हुआ। [CG PSC (ADPPO) 2013], [CG PSC (Civil Judge) 2003]

3. **रामचन्द्रदेव**

- ◆ रामचन्द्र देव ने 1349 ई. में (14 वीं शताब्दी) में मड़वा महल एवं छेरकी महल का निर्माण किया जो कि विवाह का प्रतीक है।
- ◆ कलचुरी राजकुमारी अंबिकादेवी का विवाह मड़वा महल में हुआ था।
- ◆ कवर्धा महल की डिजाइन धर्मराज सिंह ने किया था। [CG PSC (RDA)2014]
- ◆ महल के प्रथम गेट को हाथी गेट कहा जाता है।

4. **मोनिंगदेव**

- ◆ अंतिम फणिनागवंशी शासक
- ◆ रायपुर के कलचुरी शासक ब्रम्हदेव ने मोनिंगदेव को पराजित किया था।

बस्तर/चक्रकोट/भ्रमरकोट के छिंदकनागवंश (1023 - 1324 ई.)

- ◆ शासन क्षेत्र भ्रमरकोट/चक्रकोट
- ◆ इस वंश के शासकों ने भोगवतीपुरेश्वर की उपाधि धारण किये थे।
- ◆ राजधानी - चक्रकोट (बारसूर क्षेत्र दंतवाड़ा)
- ◆ संस्थापक - नृपति भूषण
- ◆ अंतिम शासक - हरिशचंद्र
- ◆ इस वंश के अंतिम शासक हरिशचंद्र को हराकर अन्नमदेव ने 1324 ई. में बस्तर क्षेत्र में काकतीय वंश की नींव रखी।
- ◆ प्रमुख शासक - धारावर्ध, मधुरान्तक, सोमेश्वर, कन्हरदेव, जयसिंह देव, राजभूषण जगदेव भूषण, हरिशचंद्र (अंतिम शासक)
[CG PSC (ADI) 2017], [CG PSC (ARTO) 2017]
- ◆ पुरातात्विक स्रोत - एराकोट से प्राप्त तेलगु व टेमरा शिलालेख से प्राप्त सती स्मारक लेख।
- ◆ धारावर्ध के सेनापति चन्द्रदित्य थे जिन्होंने बारसूर के चन्द्रदितेश्वर मंदिर, मामा-भांजा मंदिर, विशाल गणेश प्रतीमा और तालाब का निर्माण करवाया।
- ◆ हरिशचंद्र की बेटी चमेलीदेवी ने काकतीय वंश से युद्ध किया था।
- ◆ निर्माण कार्य - मामा भांजा मंदिर (बारसूर), बत्तीसा मंदिर, चंद्रदितेश्वर मंदिर

काकतीय वंश (1324-1968 ई.)

शासनकाल 1324-1968

बस्तर में सर्वाधिक लम्बा समय शासनकाल तक शासन करने वाला शासक।

प्रमुख शासक :-



प्रमुख शासक

1. अन्नमदेव

- ◆ राजधानी - मंघोता (बस्तर)
- ◆ छ.ग. में काकतीय वंश के संस्थापक
- ◆ अन्नमदेव के अपने कुलदेवी की प्रतिमा दंतेवाड़ा जिले में डंकिनी नदी के संगम पर दंतेश्वरी मंदिर का निर्माण करवाया गया।

2. पुरुषोत्तमदेव

- ◆ राजधानी - मंघोता से बस्तर स्थानांतरित किया।
- ◆ बस्तर में विश्व प्रसिद्ध रथ यात्रा गोंचा पर्व का प्रारंभ पुरुषोत्तमदेव के द्वारा किया गया।
- ◆ उपाधि - रथपति (पुरी के शासक द्वारा प्रदत्त)

3. दलपतदेव :-

- ♦ राजधानी - जगदलपुर
- ♦ इनके शासन काल में प्रथम भोंसला आक्रमण नीलू पंत ने किया जो असफल रहा। परिणाम स्वरूप 1770 ई. में राजधानी बस्तर से जगदलपुर स्थानांतरित।
- ♦ दलपतदेव ने अपने नाम से दलपत सागर नाम से तालाब/झील का निर्माण कराया।
- ♦ वर्तमान में छ.ग. का सबसे बड़ा सागर दलपत सागर है।

4. अजमेर सिंह

- ♦ बस्तर क्षेत्र में क्रांति का मसीहा कहा जाता है।
- ♦ अजमेरसिंह के नेतृत्व में बस्तर का प्रथम जनजाति विद्रोह हल्वा विद्रोह सन् 1774 में प्रारंभ हुआ। दरियादेव ने ब्रिटिश अधिकारी व मराठों के साथ कूटनीतिक षड़यंत्र कर अजमेर सिंह पर आक्रमण किया था।

5. दरियादेव

- ♦ दरियादेव के षड़यंत्र के फलस्वरूप अजमेर सिंह आंदोलन के दौरान पराजित हुआ।
- ♦ इन्होंने सत्ता हस्तांतरण हेतु जयपुर नरेश विक्रमदेव व भोंसला शासक अवीरराव के मध्य 6 अप्रैल 1778 ई. को कोटपाड़ की संधि की।
- ♦ इनके शासनकाल में 1795 ई. में कैप्टन ब्लैंट का छ.ग. आगमन हुआ जो कि कांकर तक मात्र किया बस्तर प्रवेश नहीं कर सका।
- ♦ दरियादेव के शासनकाल में बस्तर छ.ग. का अभिन्न अंग बना।
- ♦ दरियादेव के शासनकाल में 1795 ई. में भोपालपटनम का संघर्ष हुआ।
- ♦ काकतीय वंश इस समय मराठों की अधीनता स्वीकार कर लिया।

[CG PSC (RDA) 2014]

6. महिपालदेव

- ♦ इनके शासनकाल में सन् 1825 ई. में गेंदसिंह के नेतृत्व में परलकोट का विद्रोह हुआ।
- ♦ मराठा सेनापति रामचन्द्रबाघ का आक्रमण हुआ।

7. भूपालदेव

- ♦ मराठा शासकों ने नरबलि प्रथा के आधार पर भूपाल देव पर अभियोग लगाया था।
- ♦ भूपालदेव के शासन काल में दो प्रसिद्ध जनजाति विद्रोह हुए।

1. मेरिया विद्रोह (1842) 2. तारापुर विद्रोह (1842)

8. भैरमदेव

- ♦ इसके शासन काल में अंग्रेज अधिकारी चार्ल्स इलियट का 1856 ई में बस्तर आगमन हुआ।
- ♦ इनके शासनकाल में तीन प्रमुख जनजाति विद्रोह हुए।

1. लिंगागिरी विद्रोह (1856) 2. कोई विद्रोह (1859) 3. मुड़िया विद्रोह (1876)

9. रानी चोरिस :- छ.ग. की प्रथम विद्रोहिणी

10. रुद्रप्रतापदेव :-

- ♦ रुद्रप्रतापदेव को ब्रिटिश साम्राज्य के द्वारा 'सेंट ऑफ जेरुसलम' की उपाधि प्रदान की गई।
- ♦ जगदलपुर का नगर नियोजन कर इसे चौराहो का नगर बनाया।
- ♦ इसके शासन काल में गुण्डाधुर के नेतृत्व में 1910 ई. में बस्तर का प्रसिद्ध भूमकाल विद्रोह प्रारंभ हुआ।
- ♦ बस्तर में घटीनी प्रथा की शुरुआत हुई।

[CG Vyapam (FI) 2017]

[CG Vyapam (FI) 2017]

11. प्रफुल्ल कुमारी देवी

- ♦ छ.ग. की एकमात्र महिला शासिका।

12. प्रवीर चंद्र भंजदेव

- ♦ अंतिम काकतीय शासक
- ♦ इनके नाम पर छ.ग. शासन द्वारा तीरंदाजी के क्षेत्र में पुरस्कार दिया जाता है।

प्रमुख जनजाति विद्रोह

काकतीय वंश के शासन काल के दौरान दण्डकारण्य क्षेत्र में कई जनजाति विद्रोह प्रारंभ हुए। यह विद्रोह जनजाति शोषण व सांस्कृतिक अस्मिता पर हस्तक्षेप आदि उद्देश्यों को लेकर प्रारंभ हुए।

वर्ष	विद्रोह	शासक	नेतृत्वकर्ता	स्थान
1774	हल्वा	अजमेर सिंह	अजमेर सिंह	बस्तर
1825	परलकोट	महिपाल देव	गेंदसिंह	कांकेर
1842	मेरिया	भूपालदेव	हिड़मा मांझी	बस्तर
1842	तारापुर	भूपालदेव	दलगंजन सिंह	दंतेवाड़ा
1856	लिगागिरी	भैरमदेव	धुरवाराम मांझिया	बीजापुर
1859	कोई विद्रोह	भैरमदेव	नागुल दोरला	बीजापुर
1876	मुड़िया	भैरमदेव	झाड़ा सिरहा	सुकमा
1910	भूमकाल	रुद्रप्रताप देव	गुण्डाधुर	कोण्डागॉव

[CG PSC(Librain 2014)]

[CG PSC(ARO,APO) 2014]
[CG PSC(MI) 2014]

[CG PSC (RDA) 2014]

1. हल्वा विद्रोह (1774 – 1779 ई.)

- शासक – अजमेर सिंह
नेतृत्वकर्ता – अजमेर सिंह
कारण – अजमेर सिंह एवं दरियादेव के मध्य उत्तराधिकार का युद्ध एवं भौगोलिक सीमा हेतु
परिणाम – सन् 1777 में अजमेर सिंह की मृत्यु के पश्चात् संपूर्ण हल्वा विद्रोहियों का समाप्त कर दिया गया।

2. परलकोट विद्रोह (1825)

- शासक – महिपालदेव
नेतृत्वकर्ता – गेंदसिंह (परलकोट का जमींदार)
उद्देश्य – अबुझमाड़ियों को शोषणमुक्त करने हेतु।
प्रतीक – धावड़ा वृक्ष की टहनी
दमनकर्ता – पेबे (एगेन्यू के द्वारा नियुक्त)
परिणाम – गेंदसिंह को फांसी (20 जनवरी 1825)

[CG PSC (MI) 2014]

[CG Vyapam (FCPR) 2014]

नोट:— गेंदसिंह को बस्तर का प्रथम शहीद कहा जाता है।

3. मेरिया/मांझिया विद्रोह (1842–1863)

- शासक – भूपालदेव
नेतृत्वकर्ता – हिड़मा मांझी
उद्देश्य – नरबलि प्रथा समाप्त करने के विरोध में
जांचकर्ता – मैकफर्सन
दमनकर्ता – कैम्पबेल

दंतेश्वरी मंदिर में नरबलि प्रथा प्रचलित थी यहां जिस व्यक्ति की बलि दी जाती थी उसे मेरिया कहते थे।

4. तारापुर विद्रोह (1842 – 1854)

- शासक – भूपालदेव
नेतृत्वकर्ता – दलगंजन सिंह (तारापुर परगना प्रमुख)
उद्देश्य – कर बढ़ाने के विरोध में।
परिणाम – मेजर विलियम्स के द्वारा कर वृद्धि के आदेश को वापस लिया गया।

5. लिंगागिरी विद्रोह (1856) - बस्तर का मुक्ति संग्राम

- शासक - भैरमदेव
- नेतृत्वकर्ता - धुरवा राम माड़िया
- उद्देश्य - बस्तर को अंग्रेजी साम्राज्य में शामिल किये जाने के विरोध में
- परिणाम - धुरवाराम को फासी (बस्तर का दूसरा शहीद)

नोट- लिंगागिरी विद्रोह बस्तर का महान मुक्ति संग्राम कहलाता है, क्योंकि यह 1857 की क्रांति के पूर्व हुआ।

6. कोई विद्रोह (1859)

- शासक - भैरमदेव
- नेतृत्वकर्ता - नागुल दोरला (पोतेकला के जमींदार)
- उद्देश्य - साल वृक्ष की कटाई को रोकने हेतु।
- नारा - एक वृक्ष के पीछे के पीछे एक सिर

[CG PSC (ARO, APO) 2014]

[CG PSC (Pre.) 2016]

7. मुड़िया विद्रोह / मुरिया (Muriya Revolt) (जनवरी 1876)

- शासक - भैरमदेव
- नेतृत्वकर्ता - झाड़ा सिरहा
- कारण - अंग्रेजों की आटोक्रेसी नीति एवं गोपीनाथ कपड़वाल को दीवान बनाना
- प्रतीक - आम वृक्ष की टहनी
- दमनकर्ता - मैक जॉर्ज
- परिणाम - 2 मार्च 1876 को बस्तर में काला दिवस मनाया गया जिसके बाद मैक जॉर्ज ने 8 मार्च 1876 को जगदलपुर में मुरियादरबार का आयोजन करवाया।

[CG PSC (MI) 2014]

8. भूमकाल विद्रोह (फरवरी 1910)

- शासक - रुद्रपतापदेव
- नेतृत्वकर्ता - गुण्डाधूर (नेतानार के जमींदार)
- उद्देश्य - स्थानीय जनता की उपेक्षा शोषण वनों के उपयोग एवं शराब बनाने पर प्रतिबंध का विरोध
- शुरुआत - पुसपाल बाजार से
- प्रतीक - लाल मिर्च एवं आम की टहनी
- मुखबीर - सोनू मांझी
- दमनकर्ता - कैप्टन गेयर

[CG Vyapam (PDO) 2015]

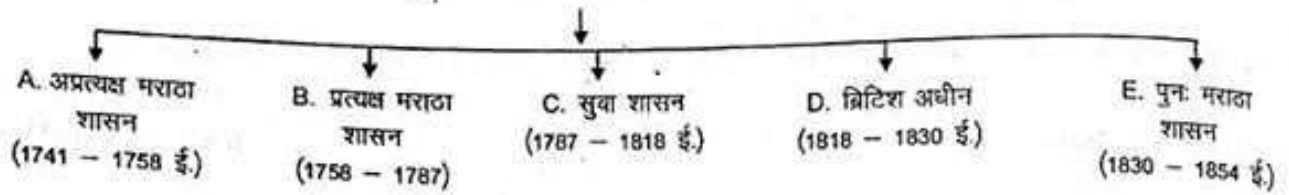
अंतिम सामना - विद्रोहियों व अंग्रेजों के मध्य अलवार में हुआ।

नोट- रानी स्वर्णकुंवर व दीवान लाल कालेंद्र ने इस विद्रोह का नेतृत्व गुण्डाधूर के हाथों सौंपा।

छ.ग. का आधुनिक इतिहास

कल्चुरी शासन काल में 1741 में नागपुर के भोसला सेनापति भास्कर पंत ने आक्रमण किया।

[CG Vyapam (LOI)-2015], [CG PSC (Librarian)-2014]



A. अप्रत्यक्ष मराठा शासन (1741-1758)

1. रघुनाथ सिंह
2. मोहन सिंह

B. प्रत्यक्ष मराठा शासन (1758 - 1787 ई.)

बिम्बाजी भोसले

- ♦ राजधानी — रतनपुर (मराठों का छ.ग. में प्रथम राजधानी)
- ♦ छ.ग. में प्रथम मराठा शासक
- ♦ परगना पद्धति के सूत्रधार (जन्मदाता — सूबेदार विठ्ठलराव दिनकर)
- ♦ इन्होंने रायपुर एवं रतनपुर का प्रशासनिक एकीकरण किया।
- ♦ न्यायालय की स्थापना की।
- ♦ इन्होंने राजनांदावां तथा खुज्जी नामक दो जमीदारियां प्रारंभ की।
- ♦ बिम्बाजी भोसले के शासन काल में यूरोपीय यात्री कोल ब्रूक छ.ग. आए।
- ♦ दशहरा में स्वर्ण पत्र देने की प्रथा प्रारंभ की।
- ♦ बिम्बाजी भोसले ने रतनपुर में राम मंदिर का निर्माण करवाया।
- ♦ रायपुर में दुधाधारी मठ का निर्माण।

[CG Vyapam (Shikshakarmi) 2009]

[CG Vyapam (RDP) 2017], [CG PSC (ADIHS) 2014]

[CG PSC (ADPPO) 2013]

[CG PSC (Mains) 2011]

व्यंकोजी भोसले :-

- ♦ व्यंकोजी ने छ.ग. में प्रत्यक्ष शासन करने के स्थान पर नागपुर से प्रदेश का शासन संचालन का निर्णय लिया।
- ♦ व्यंकोजी ने छ.ग. में सूबेदारी प्रथा की शुरुआत की।

[CG Vyapam (RI) 2017], [CG PSC (ADPPO) 2013]

C. सूबा शासन (1787 - 1818 ई.)

इस शासन पद्धति के अंतर्गत प्रदेश में अनेक सूबेदारों की नियुक्ति की गई। जिसका वर्णन इस प्रकार है:-

1. महिपत राव दिनकर

- ♦ छ.ग. के प्रथम सूबेदार थे।
- ♦ इनके काल में 1790 ई. में फारेस्टर का छ.ग. हुआ।

[CG Vyapam (Mahila Supervisor) 2013]

2. विठ्ठलराव दिनकर

- ♦ इनके काल में 1795 में मिस्टर ब्लंट छ.ग. आए।
- ♦ परगना पद्धति के जन्मदाता। (प्रमुख — कामाविसदार)
- ♦ इन्होंने 36 गढ़ों को 27 परगनों में विभाजित कर दिया।

3. भवानी कालू

- ◆ सबसे कम समयावधि का सूबेदार।

4. केशव गोविंद

- ◆ सर्वाधिक समय तक सूबेदार।
- ◆ इनके काल में कोलब्रुक छ.ग. आए।

5. व्योकोजी गोपाल

- ◆ इनके समय में पिंडारियों की गतिविधि अपने चरम सीमा पर थी।

6. सरकार हरी

7. सीताराम टांटिया

8. यादव राव दिवाकर — छ.ग. के अंतिम सूबेदार

नोट— छ.ग. के ब्रिटिश रेजिडेंट जेनकिंस ने सूबा पद्धति को समाप्त कर ब्रिटिश अधीशकों की नियुक्ति की।

यूरोपिय यात्री	शासन/प्रशासन
1. कैप्टन ब्लंट 2. फारेस्टर 3. मि. ब्लंट 4. कोल ब्रुक	व्योकोजी गोपाल महिपत राव विठ्ठलराव दिनकर केशव गोविन्द

D. ब्रिटिश शासन अधीन मराठा (1818-1830)

सन् 1818 में तृतीय आंग्ल मराठा युद्ध में मराठा बुरी तरह से पराजित होने के बाद मराठा प्रतिनिधि अप्पा साहब ने सहायक संधि स्वीकार कर ली जो कि रघुजी तृतीय के व्यस्क होने तक के लिए लागू किया जायेगा। यह प्रावधान का था कि अंग्रेजों ने अधीशकों के माध्यम से शासन किया जिसका क्रम इस प्रकार है।

- ◆ 1818 में पहली बार छ.ग. अंग्रेजी शासन के अधीन हुआ। [CGPSC(Librain)2014]

ब्रिटिश सुपरिटेण्डेंट विवरण

1. कैप्टन एडमंड

- ◆ छ.ग. के प्रथम ब्रिटिश अधीशक
- ◆ डोंगरगढ़ के जमींदार का विद्रोह हुआ।
- ◆ नागपुर के भोसला राज्य पर ब्रिटिश सारक्षण के अंतर्गत छ.ग. में नियुक्त प्रथम सुपरिटेण्डेंट कैप्टन एडमंड था।

[CG PSC (Pre) 2016], [CG Vyapam (MFA) 2017]

[CG PSC(ASST. PROF. ENGG) 2016]

2. एगेन्यू

- ◆ 1818 ई. छ.ग. की राजधानी रतनपुर से रायपुर ले गई।
- ◆ इसने 27 परगना को 8 परगनों में सीमित कर दिया।
- ◆ परगना — 1. रतनपुर, 2. रायपुर, 3. धमतरी, 4. दुर्ग-धमधा, 5. नवागढ़, 6. खरौद, 7. राजहरा, 8. बालौद,

[CG PSC (Pre) 2013], [CG Vyapam (AMIN)&(Ptuari) 2017]

नोट — सबसे बड़ा परगना — रायपुर,

- ◆ सबसे छोटा परगना — राजहरा
- ◆ 1819 में राम साय का सोनाखान में विद्रोह।
- ◆ परलकोट का विद्रोह 1825।

3. सेंडिस

- ◆ इन्होंने ताहूतदारी प्रथा की शुरूआत की।
- ◆ लोरमी और तरंगा नामक दो तालुका का निर्माण करवाया।
- ◆ बस्तर व करीद राज्यों में समझौता कराया।
- ◆ सरकारी काम काज का माध्यम अंग्रेजी कर दिया।
- ◆ छ.ग. में डाक - तार की व्यवस्था प्रारंभ की।

4. हण्टर

5. विलकिंसन

6. क्राफर्ड

- ◆ छ.ग. के अंतिम ब्रिटिश अधीक्षक।
- ◆ भोसलों को सत्ता का हस्तांतरण किया।

E. पुनः भोसला शासन (1830-1854)

- ◆ सन् 1828 में भारत के गवर्नर जनरल लार्ड विलियम बैंटिक नियुक्त हुए। इन्होंने भारतीय रियासतों के प्रति उदारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए। सन् 1829 में अंग्रेज और भोसला शासक रघुजी तृतीय के मध्य संधि हुई इसके पश्चात् मराठा शासकों को उनका राज्य निर्धारित शर्तों के साथ सौंप दिया गया।
- ◆ रघुजी तृतीय ने छ.ग. का शासन जिलेदारों के माध्यम से संचालित करने का निर्णय लिया।
- ◆ जून 1830 को ब्रिटिश अधीक्षक क्राफर्ड ने भोसला प्रतिनिधि कृष्णाराव अप्पा को छ.ग. का शासन सौंप दिया।
- ◆ 1830 - 1854 में इस क्षेत्र को जिल्हा (Zilha) कहा जाता था प्रशासन को जिल्हेदार (Zilhedar) कहा जाता है।

[CG Vyapam (Maha.)2017]

कुल 8 जिलेदार (Zilhedar) हुए :-

कृष्णाराव अप्पा

- ◆ छ.ग. के प्रथम जिलेदार

गोपाल राव

- ◆ छ.ग. के अंतिम जिलेदार

नोट :- सन् 1854 में भारत के गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने हड़पनीति के तहत नागपुर राज्य को ब्रिटिश शासन में विलय कर लिया। अब छ.ग. अंतिम रूप से ब्रिटिश शासन के अंतर्गत शामिल हो गया।

मराठा कालीन शासन व्यवस्था

भोसला वंश के शासकों ने 1741 से 1854 तक छ.ग. में शासन किया इन्होंने कल्चुरी शासकों की शासन व्यवस्था में परिवर्तन कर कई नवीन प्रशासनिक व राजनैतिक नीतियों को लागू किया।

प्रशासनिक अधिकारी

भोसला शासकों ने अपने शासन संचालन करने के लिए अनेक अधिकारियों की नियुक्ति की। इन पदों का विवरण इस प्रकार है।

○ सूबेदार	<ul style="list-style-type: none"> ◆ सूबा शासन का सर्वोच्च अधिकारी, जो भोसला शासकों के प्रतिनिधि के रूप में शासन करता था। ◆ यह सैनिक, दीवानी व फौजदारी मामले विभाग का प्रमुख होता था।
○ कमाविसदार	<ul style="list-style-type: none"> ◆ परगना के सर्वोच्च अधिकारी, जो सूबेदार के प्रति उत्तरदायी होता था। ◆ अपने क्षेत्र में शांति सुरक्षा के साथ-साथ राजस्व वसूली जैसे कार्यों का निर्वहन करता था।
○ गोटिया	<ul style="list-style-type: none"> ◆ यह ग्रामीण स्तर पर सर्वोच्च पद था। जिसका प्रमुख कार्य ग्रामीण शासन का संचालन था। यह कल्चुरी कालीन पद था जो मराठा काल में भी यथावत् बना रहा है।
○ पटेल	<ul style="list-style-type: none"> ◆ मराठाकाल में सृजित नया पद जो लगान के निर्धारण व वसूली में सहायता करता था।
○ फड़नवीस	<ul style="list-style-type: none"> ◆ आय-व्यय का हिसाब करने वाला सर्वोच्च लेखा अधिकारी।
○ बरारपाण्डेय	<ul style="list-style-type: none"> ◆ यह प्रत्येक गांव के कृषि उत्पादकता के आधार पर लगान का निर्धारण करता था।
○ पंडरीपाण्डे	<ul style="list-style-type: none"> ◆ मादक द्रव्य से होने वाली आय का हिसाब रखने वाला अधिकारी।
○ पोतदार	<ul style="list-style-type: none"> ◆ यह खजांची के रूप में कार्य करता था।

[C.G. (PSC) 2011]

प्रशासन— भोसला शासकों के द्वारा सूबा शासन, परगना पद्धति को छ.ग. में लागू किया। इस समय प्रशासन को दो भागों में बांटा गया था।

1. खालसा क्षेत्र — यह मराठा शासन के प्रत्यक्ष नियंत्रण में थे।
2. जमींदारी क्षेत्र — इन क्षेत्रों में जमींदारों का नियंत्रण था।

राजस्व व्यवस्था

भोसला शासकों की आय का प्रमुख स्रोत भूमिकर था। इसके अलावा निम्नांकित कर भी लिये जाते थे :-

1. टकोली (Takali) — जमींदारों से लिया जाने वाले वार्षिक कर
2. सायर (Sair) — आयात निर्यात कर (Tax on the sales of goods)
3. कलाली — आबकारी कर
4. पंडरी (Pandri) — गैर कृषि को से लिया जाने वाला कर (Non Agricultres)
5. सेवई (Sewai) — यह कई अस्थायी करों का सामूहिक नाम (अर्थदण्ड या जुर्माने राशि)
6. जमींदारी कर — यह आयात किये हुए अनाज पर लगाया गया कर

मुद्रा :- नागपुरी रूपया
प्राचीन मवेशी बजार — रतनपुर

नोट— मराठा शासन काल में — घमघा, बरगढ़ और तारपुर के विद्रोह हुआ।

छ.ग. में ब्रिटिश शासन (1854 – 1947)

- 13 मार्च 1854 को लार्ड डलहौजी ने हड़पनीति के तहत नागपुर राज्य का ब्रिटिश साम्राज्य में विलय कर दिया।
- इस दौरान छ.ग. के प्रमुख अधिकारी के रूप में डिप्टी कमिश्नर नियुक्त किए गए।
- छ.ग. के प्रथम डिप्टी कमिश्नर - चार्ल्स सी इलियट
- अतिरिक्त डिप्टी सहायक कमिश्नर - गोपाशव (बिलासपुर), मोबिब-उल हसन (रायपुर)

तहसीलदार व्यवस्था

ब्रिटिश शासन ने डिप्टी कमिश्नर के प्रशासनिक कार्य में सहायता हेतु 1854 ई. में तहसीलदार व्यवस्था प्रारंभ की। तहसीलदारों को दीवानी एवं फौजदारी अधिकार प्रदान किए गए।

छ.ग. में प्रथम तीन तहसील - (1854 ई. में)

- 1 रायपुर, 2 धमतरी, 3 रतनपुर

जिला :-

- सन् 1861 में मध्यप्रांत के गठन के समय छ.ग. के तीन जिले -
- 1. संबलपुर, 2. बिलासपुर, 3. रायपुर
- 1861 - मध्यप्रांत का गठन (जिसमें वर्तमान मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छ.ग. को मिलाकर)
- 1862 - मध्यप्रांत में 5 संभाग बनाया गया जिसमें छ.ग. भी एक संभाग बना।

[CG PSC (Pre) 2014, 15]

भौगोलिक पुनर्गठन (1905)

- 1905 के बंगाल विभाजन के तहत संबलपुर जिला उड़ीसा में शामिल किया गया।
- छोटा नागपुर के 5 रियासत- कोरिया, चांगभखार, सरगुजा, उदयपुर व जशपुर को छ.ग. में शामिल किया गया।
- 1862-छ.ग. में पुलिस व्यवस्था प्रारंभ

छ.ग. में स्वतंत्रता आंदोलन

1857 के दौरान में भारत के साथ ही साथ छ.ग. में भी अनेक आंदोलन घला जिनका विवरण इस प्रकार है।

1857 की क्रांति

सन् 1857 में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध महान क्रांति हुई छ.ग. में इस क्रांति के प्रभाव स्वरूप अनेक क्षेत्रों में अंग्रेजों की शोषणकारी शासन व्यवस्था के विरोध में विद्रोह हुए। जो निम्नांकित है:-

1857 के क्रांति के समय रायपुर के डिप्टी कमिश्नर कैप्टन इलियट थे।

1. सोनाखान विद्रोह (Sonakhan Revolt)

[CG PSC (MD)-2010]

- स्थान - सोनाखान, बौलादा बाजार
- नेतृत्वकर्ता - वीर नारायण सिंह (सोनाखान के जमींदार एवं बिंझवार जनजाति)

[CG PSC (Librarian) 2014], [CG PSC (ADI) 2017], [CG Vyapam (RDP) 2017]

कारण - अकाल पीड़ितों को अनाज उपलब्ध कराने के लिए वीरनारायण सिंह ने कसडोल के व्यापारी माखनलाल के गोदाम से अनाज लूटकर जनता में बांट दिया।

- अनाज लूटने के आरोप में कैप्टन स्मिथ ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया।
- 10 दिसंबर 1857 को वीरनारायण सिंह को रायपुर के जयस्तंभ चौक में चार्ल्स इलियट के फैसले के अनुसार फांसी दे दिया गया।

[CG PSC (ABEO)-2014]

वीर नारायण सिंह छ.ग. स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम शहीद कहलाये।

[CG Vyapam (FI)-2013]

2. सुरेन्द्रसाय का विद्रोह /सम्बलपुर विद्रोह (Sambalpur Revolt)

- ♦ स्थान - संबलपुर
- ♦ नेतृत्वकर्ता - सुरेन्द्रसाय (संबलपुर के जमींदार)
- ♦ 1864 ई. में सुरेन्द्र साय को असीरगढ़ के किले में बंद रखा जहाँ 1884 ई. में इनकी मृत्यु हो गई।
- ♦ छ.ग. के अंतिम शहीद माना जाता है।

[CG PSC(ADI) 2017]

3. सोहागपुर का विद्रोह/रायपुर का सिपाही विद्रोह (Sepoy Revolt of Raipur)

- ♦ स्थान - सरगुजा
- ♦ नेतृत्वकर्ता - रंगाजी बापू

4. सैन्य विद्रोह

- ♦ स्थान - रायपुर
- ♦ नेतृत्वकर्ता - हनुमान सिंह (बैसवाड़ा के राजपुत)
- ♦ हनुमान सिंह तीसरी बटालियन में मैग्जीन लश्कर पद पर कार्यरत थे।
- ♦ इन्होंने 1857 की क्रांति व मंगल पाण्डे से प्रभावित होकर 1858 में सार्जेंट सिडवेल की हत्या कर हनुमान सिंह फरार हो गये तथा उनके 17 साथियों को मृत्युदंड दिया गया।
- ♦ इन्हें छ.ग. का मंगल पांडे कहा जाता है।

[CG PSC(ADI) 2017]

[CG PSC 2014]

5. सारंगढ़ का विद्रोह

- ♦ स्थान - रायगढ़
- ♦ नेतृत्वकर्ता - कमलसिंह

6. उदयपुर का विद्रोह (Udaipur Revolt)

- ♦ नेतृत्वकर्ता - कल्याण सिंह

[CG PSC(ADI) 2017]

राष्ट्रीय आंदोलन की प्रमुख परिस्थितियाँ और छत्तीसगढ़ (एक संक्षेप में)

सन्	घटना क्रम	संबंधित व्यक्ति	विशेष
1900	छ.ग. के प्रथम पत्रिका	माधवराव सप्रे छ.ग. मित्र का प्रकाशन	माधवराव सप्रे द्वारा पेण्ड्रा रोड बिलासपुर से प्रकाशन
1905	समित्र मण्डल का गठन	पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा	
1907	सूरत अधिवेशन	नरम दल—पं. सुन्दरलाल शर्मा, डा. शिवराम मुंजे, केलकर गरम दल—पं. रविशंकर शुक्ल, माधव राव सप्रे, दादा साहेब खपर्डे	कांग्रेस का नरम दल एवं गरम दल में विभाजन
1907	देश का प्रथम छात्र हड़ताल	ठा. प्यारेलाल सिंह	नौदगांव स्टेट हाई स्कूल में देश का प्रथम छात्र हड़ताल हुआ था। जिसका नेतृत्व ठा. प्यारेलाल सिंह ने किया था
1908	केसरी (मराठी भाषा का)	माधव राव सप्रे	बालगंगाधर तिलक द्वारा प्रकाशित 'केसरी' (मराठी भाषा) का प्रकाशन हिन्दी में प्रकाशन किया था माधव राव सप्रे द्वारा
1909	सरस्वती पुस्तकालय की	ठा. प्यारे लाल सिंह सह. —राजुलाल शर्मा, छबिलाल चौधे	राजनांदगांव के निवासियों में राष्ट्रीय भावना उत्प्रेरित करने स्थापना के लिए ठा. प्यारेलाल सिंह ने सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना की थी।
1912	कान्य कुब्ज सभा	पं. रविशंकर शुक्ल	
1916	होमरूल की स्थापना	रायपुर—पं. रविशंकर शुक्ल बिलासपुर—ई. राघवेन्द्र राव प्रारंभ दुर्ग—घनश्यामसिंह गुप्त राजनांदगांव—ठा. प्यारेलाल सिंह	1916 में बालगंगाधर तिलक एवं एनीबेसेन्ट ने भारत में किया था जिसके तर्ज प्रदेश में भी स्थापना हुई।
1920	कंडेल नहर सत्याग्रह	नेतृत्वकर्ता—पं. सुन्दरलाल शर्मा सहयोगी—छोटे लाल श्रीवास्तव	धमतरी के कंडेल ग्राम में सिंचाई कर के विरोध में जुलाई 1920 में कण्डेल नहर सत्याग्रह हुआ था। नारायणराव मेघावले।

1920	महात्मा गांधी का छ.ग. आगमन	महात्मा गांधी के साथ मौलाना शौकात अली आये थे।	कंडेल नहर सत्याग्रह में भाग लेने हेतु महात्मा गांधी छ.ग. आये थे, परन्तु आगमन के पूर्व ही अंग्रेजों ने वापस ले लिया था।
1920	(BNC) बंगाल नागपुर कॉटन मिल भण्डार हड़ताल	स्थान-राजनांदगांव नेतृत्वकर्ता-ठा. प्यारेलाल सिंह	यह आंदोलन 36 दिन तक चला था इस आंदोलन के दौरान प्रसिद्ध श्रमिक नेता वी. वी. गिरी छ.ग. आये थे।
1920	असहयोग आंदोलन	ठा. प्यारेलाल, ई. राघवेन्द्र, बैरिस्टर छेदीलाल द्वारा वकालत का त्याग। वामनराव लाखे द्वारा राय साहब की उपाधि का त्याग दिया गया 1921 में डा. राजेन्द्रप्रसाद सी. आर. राजगोपालाचारी एवं सुभद्रा कुमारी चौहान असहयोग आंदोलन के प्रचार के लिए छ.ग. आये थे।	असहयोग आंदोलन के दौरान छ.ग. में रायपुर विलासपुर एवं धमतरी में राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना किया गया था।
1922	सिहावा नगरी जंगल सत्याग्रह	नेतृत्व कर्ता-श्यामलाल सोम, विश्वम्भर पटेल, पंचम सिंह	आदिवासियों के वन प्रवेश व वन के उपयोग पर प्रतिबंध लगाये जाने के कारण जंगल सत्याग्रह किया गया था।
1922	श्रीकृष्णा जन्म स्थली या जेल पत्रिका का प्रकाशन	सुंदरलाल शर्मा	1922 में असहयोग आंदोलन के दौरान पं. सुंदरलाल शर्मा को जेल हो गया जहाँ से हस्तलिखित पत्रिका निकाला।
1923	स्वराज पार्टी का गठन	रायपुर-पं. रविशंकर शुक्ल विलासपुर-ई. राघवेन्द्र राव, बैरिस्टर छेदीलाल दुर्ग-घनश्याम सिंह गुप्त राजनांदगांव-ठा. प्यारेलाल सिंह	स्वराज पार्टी गठन का
1923	झण्डा सत्याग्रह (जबलपुर मध्यप्रान्त)	विलासपुर-क्रांति कुमार भारती धमतरी-सुन्दरलाल शर्मा	
1923	कांग्रेस का काकीनाड़ा अधिवेशन	नेतृत्व - नारायण राव मेघावले	बस्तर रास्ते से पैदल काकीनाड़ा अधिवेशन में भाग लेने आंध्रप्रदेश जाना था।

1925	सुंदरलाल शर्मा का अछूतोद्धार कार्यक्रम	नेतृत्व-पं. सुंदरलाल शर्मा	23 नवम्बर 1925 को पं. सुंदरलाल शर्मा ने राजीवलोचन मंदिर में हरिजनो का प्रवेश कराया था। इस काम हेतु पं. सुंदरलाल शर्मा को महात्मा गांधी ने गुरु की उपाधि दी थी।
1930	सविनय अवज्ञा आंदोलन (प्रथम चरण)	सविनय अवज्ञा आंदोलन में पाँच पाण्डव सक्रिय रहे। यद्विष्ठिर- वामनराव लाखे भीम - लक्ष्मी मंहत नारायण दास अर्जुन - ठा. प्यारेलाल सिंह नकुल - अब्दुल रऊफ सहदेव - शिवदास डागा	सविनय व्यवस्था आंदोलन के दौरान पं. रविशंकर शुक्ल ने हाइड्रोक्लोरिक अम्ल व सोडा मिलाकर नमक बनाया था।
1930	वानरसेना का गठन	बिलासपुर- यासुदेव देवराज	
1932	वानरसेना का गठन	रायपुर- संस्थापक - बलीराम आजाद व यतियतनलाल (संचालक)	
1932	सविनय अवज्ञा आंदोलन का द्वितीय चरण	पूरे प्रांत के लिए पं. रविशंकर शुक्ल को डाटेक्टर नियुक्त किया गया था।	सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान 1932 में रायपुर जिले का नेतृत्व श्रीमती राधा बाई ने किया था।
22 (Nov.) 1933	गांधी जी का द्वितीय प्रवास	गांधी जी के सहयोगी मीरा बेन, ठक्कर बापा महादेव देशाई	गांधी जी का द्वितीय छ. ग. प्रवास का उद्देश्य हरिजन उत्थान था।
1935	बरार का मध्य प्रांत में विलय	भारत शासन अधिनियम 1935 के द्वारा प्रशासनिक दृष्टि से अरार को मध्य प्रांत में विलय कर दिया गया	
1937	किसान आन्दोलन	स्थान-दुर्ग नेतृत्वकर्ता-नरसिंह प्रसाद अग्रवाल	
1937	छ. ग. में प्रथम आम चुनाव	इस समय छ. ग. मध्य प्रांत का हिस्सा था। जिसमें प्रांतीय चुनाव में निर्धारित सदस्य थे। रायपुर-पं. रविशंकर शुक्ल बिलासपुर-ई. राघवेंद्र राव दुर्ग-घनश्याम सिंह गुप्त	1937 में खरे मंत्रिमण्डल में रविशंकर शुक्ल को पहले शिक्षा विभाग दिया गया था।

1940	व्यक्तिगत सत्याग्रह	पं. रविशंकर शुक्ल	पं. रविशंकर शुक्ल छ. ग. के प्रथम सत्याग्राही माने जाते हैं।
1942	भारत छोड़ो आंदोलन	छ.ग. से वर्धा अधिवेशन में छ.ग. से पं. रविशंकर शुक्ल, घनश्याम सिंह गुप्त, बैरिस्टर छेदीलाल, मंहत लक्ष्मी नारायण यतियतन लाल ने भाग लिया था।	
1942	रायपुर षडयंत्र केश	प्रमुख नेता-परसराम सोनी	उद्देश्य-विस्फोटक सामग्री व बम बनाना।
1942	रायपुर डायनामाइट	नेतृत्वकर्ता-बिलख नारायण अग्रवाल सहयोगी-ईश्वरीलाल, सुधीरमुखर्जी	उद्देश्य-क्रांतिकारियों को जेल से निकालने के लिए दीवार को डायनामाइट से उड़ाने की योजना
1946	मध्य प्रांत में दूसरा चुनाव(1946)	मुख्यमंत्री -पं. रविशंकर शुक्ल	
1946	संविधान निर्मात्री सभा में छ.ग. से भागीदारी	संविधान सभा में छत्तीसगढ़ से 6 व्यक्तियों ने भाग लिया था ब्रिटिश प्रांत -03 1. पं. रविशंकर शुक्ल (रायपुर) 2. बैरि, छेदीलाल (बिलासपुर) 3. घनश्याम सिंह गुप्त (दुर्ग) देशी रियासत-03 1. रघुराज सिंह दीवान (सरगुजा) 2. रामप्रसाद पोटाई (काकर) 3. पं. किशोर मोहन त्रिपाठी (रायगढ़)	
15 (Aug) 1947	भारत स्वतंत्रता अधिनियम	15 (Aug) 1947 को राज्य के नेताओं ने विभिन्न स्थान पर झंडा फहराये। 1. वामन राव लाखे-गांधी चौक (रायपुर) 2. पं. रविशंकर शुक्ल-सीताबढ़ी (नागपुर) 3. घनश्याम सिंह गुप्त-(दुर्ग) 4. रामगोपाल तिवारी-बिलासपुर 5. आर. के. पाटील- पुलिस लाइन (रायपुर)	

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

28 दिसम्बर 1885 को ब्रिटिश अधिकारी ए.ओ.ह्यूम के प्रयासों से मुम्बई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इस राजनीतिक संस्था में छ.ग. के अनेक राज नेता भाग लेकर भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय अनेक आंदोलन में भाग लिये।

○ 1889 का बम्बई अधिवेशन

○ 1900 — माधव राव सप्रे द्वारा पेण्ड्रा रोड बिलासपुर से छ.ग. के प्रथम पत्रिका छ.ग. मित्र का प्रकाशन हुआ।

○ 1905 — पं. सुन्दरलाल शर्मा द्वारा समित्र मण्डल का गठन किया गया।

○ 1906 — छ.ग. में कांग्रेस का स्थापना हुआ और इस दौरान पं. सुन्दरलाल शर्मा ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की।

○ 1907 सूरत अधिवेशन

◆ कांग्रेस का गरम दल एवं नरम दल में विभाजन।

◆ छ.ग. में नरम दल के नेता — पं. सुन्दरलाल शर्मा, डॉ. शिवराम मुंजे, केलकर

◆ छ.ग. से गरम दल के नेता — माधवराव सप्रे, पं. रविशंकर शुक्ल, दादा साहब खापर्डे,

○ 1907 देश की प्रथम छात्र हड़ताल

◆ स्थान — नांदगाँव स्टेट हाई स्कूल

◆ नेतृत्वकर्ता — डा. प्यारेलाल

◆ 1908 — स्वदेशी आंदोलन के समय तिलक द्वारा लिखा गया 'केसरी' (मराठी भाषा में) जिसका माधवराव सप्रे ने हिन्दी में अनुवाद किया।

○ 1909 सरस्वती पुस्तकालय की स्थापना —

◆ स्थान — राजनागांव

◆ स्थापनाकर्ता — डा. प्यारेलाल सिंह

◆ उद्देश्य — राजनांदगांव के निवासियों में राष्ट्रीय भावना उत्प्रेरित करना।

○ 1912 — पं. रविशंकर शुक्ल ने कान्यकुब्ज समा की स्थापना की।

○ 1915 — 20 जनवरी 1920 को रायपुर को रायपुर के टाउनहाल में 300 मालगुजारी का सम्मेलन हुआ। [CG PSC (Pre)2016]

○ 1916 होमरूल आंदोलन :— भारत में बालगंगाधर तिलक ने आयरलैंड के आंदोलन से प्रेरित होकर भारत में होमरूल आंदोलन प्रारंभ किया। इसके अंतर्गत संपूर्ण भारत में होमरूल लीग की स्थापना की गई। जिसके तहत प्रदेश में भी इसकी स्थापना हुई। [CG PSC (ADI)2017]

छ.ग. में होमरूल लीग की स्थापना

1. रायपुर — पं. रविशंकर शुक्ल

2. बिलासपुर — ई. राघवेन्द्र राव

3. दुर्ग — घनश्याम सिंह गुप्त

4. राजनांदगांव — डा. प्यारेलाल सिंह

नोट:- • छ.ग. में केवल तिलकवादी होमरूल आंदोलन सक्रिय रहा। [CG PSC (ADI)2017]
• इस संगठन में सदस्य संख्या 1700 से अधिक थे। [CG PSC (ADI)2017]
• होमरूल लीग की सम्मेलन 1918 में रायपुर में हुआ। [CG PSC (Eng.)2016]

- 1918
- पं. सुन्दरलाल शर्मा का जनक कार्यक्रम
 - तख्त विद्रोह
 - अखिल भारतीय कांग्रेस सम्मेलन - सी. एम. ठक्कर, ई. राघवेन्द्र राव ने सदस्यता ग्रहण किया।

1919 रोलेट एक्ट :

- रायपुर से - माधवराव सप्रे, रविशंकर शुक्ल महंत लक्ष्मीनारायण
- बिलासपुर से - ई. राघवेन्द्र राव, डा. छेदीलाल, वामनराव लाखे, यदुनंदन प्रसाद, शिव दुलारे आदि ने काले कस्त्र धारण किये।

1920 खिलाफत आंदोलन

- रायपुर से हिन्दु नेता - पं. रविशंकर शुक्ल व मुस्लिम नेता - असगर अली ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया।
- बिलासपुर से - वजीर खाँ अकबर खाँ और इकीम खाँ ने नेतृत्व किया।

कंडेल नहर सत्याग्रह: जुलाई 1920

- स्थान - कांडेल (धमतरी)
- नेतृत्वकर्ता - पं. सुंदरलाल शर्मा
- सहयोगी - छोटे लाल श्रीवास्तव, नारायणराव मेघावाले
- कारण - सिंचाई कर के विरोध में

[CG PSC (ADD) 2017]
[CG PSC (ARTO) 2017]

गांधीजी का प्रथम छ.ग. आगमन : 1920

- 20 दिसंबर 1920 को महात्मा गांधी मौलाना शौकत अली के साथ रायपुर आए। [CG Vyapam (FCPR) 2016], [CG PSC (Pre) 2005]
- उद्देश्य - कंडेल नहर सत्याग्रह (धमतरी) में भाग लेने हेतु।
- परिणाम - गांधी जी के छ.ग. के छ.ग. आगमन के पूर्व ही अंग्रेजों ने सिंचाई कर वापस ले लिया गया।

1920 बंगाल नागपुर कॉटन मिल मजदूर हड़ताल

छ.ग. का प्रथम एवं सबसे बड़ा मजदूर हड़ताल।

- स्थान - राजनांदगाव
- नेतृत्वकर्ता - ठाकुर प्यारेलाल सिंह [CG PSC (Pre) 2015], [CG PSC (ABEO) 2014]
- कारण मजदूरों से अधिक कार्य करवाना तथा वेतन कम देना।
- समयावधि - यह आंदोलन 36 दिनों तक चला। [CG PSC (Pre) 2014], [CG Psc (ADDPO) 2013]
- इस आन्दोलन के दौरान प्रसिद्ध श्रमिक नेता वी.वी. गिरी राजनांदगाव आये और मजदूरों के पक्ष में फैसला सुनाया।
- नोट - बी.एन.सी. मिल में 1920 के अलावा 1924 तथा 1937 में भी ठा. प्यारेलाल द्वारा आंदोलन किया गया।

वर्ष	आंदोलन	नेतृत्वकर्ता	कारण
1920	प्रथम	ठा. प्यारेलाल	अधिक कार्य एवं कम वेतन
1924	द्वितीय	ठा. प्यारेलाल	श्रमिकों पर दमनकारी नीति
1937	तृतीय	ठा. प्यारेलाल	मजदूरों का वेतन में कटौती